डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

ग़ालिब की शायरी में पहली बार इंसान को इंसान समझने वाली रिवायत मिलती है – शरीफ़ हुसैन क़ासमी

गोपीचंद नारंग की पुस्तक ग़ालिब : अर्थवत्ता, रचनात्मकता एवं शून्यता पर हुई चर्चा

23 नवंबर 2020; नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर चल रही पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान आज गोपीचंद नारंग की पुस्तक ग़ालिब : अर्थवत्ता, रचनात्मकता एवं शून्यता पर पुस्तक चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उर्दू एवं फारसी के प्रख्यात विद्वान शरीफ़ हुसैन क़ासमी ने पुस्तक चर्चा के दौरान कहा कि ग़ालिब पर यह किताब इतनी महत्त्वपूर्ण है कि इसके कई–कई शे'रों और जुमलों पर पूरी की पूरी किताबें लिखी जा सकती हैं। आगे उन्होंने कहा कि इस पुस्तक को पढ़ते हुए हम यह समझ सकते हैं कि ग़ालिब की शायरी उनके अपने जमाने की रिवायत से बिल्कुल अलग थी और इंसान को इंसान की तरह समझने की कोशिश थी। अपनी बात जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि 524 पृष्ठ की यह पुस्तक जिसमें 12 अध्याय है, ग़ालिब को नई दृष्टि से समझने और समझाने की कोशिश है। उन्होंने यह पुस्तक ग़ालिब पर 100 से अधिक अन्य पुस्तकों के अध्ययन के बाद लिखी है जो उनकी व्यापकता और विविधता को प्रदर्शित करती है। इस किताब में केवल ग़ालिब ही नहीं बल्कि उन पर पहली पुस्तक लिखने वाले उनके शार्गिद अल्ताफ हुसैन हाली भी एक नायक के रूप में प्रस्तुत किए गए है। यह तो सब कहते हैं कि ग़ालिब का अंदाजे–ए–बयां कुछ और है लेकिन उसको स्पष्ट नहीं कर पाते हैं। इस पुस्तक में ग़ालिब के अंदाजे–ए–बयां के पीछे के कारणों को बेहद शोधपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा कोरोना काल में भी इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक पर चर्चा करने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से ही महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के बारे में पाठकों को जानकारी मिल पाती है।

ज्ञात हो कि उर्दू फारसी के प्रख्यात विद्वान शरीफ़ हुसैन क़ासमी का संबंध दिल्ली विश्वविद्यालय से रहा है, जहाँ उन्होंने फारसी विभाग के उस्ताद के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की। आपकी 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं और आपको भारत के राष्ट्रपति एवं देश–विदेश की कई महत्त्वपूर्ण संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने किया।

(के. श्रीनिवासराव)